Impact Factor 8.575 (SJIF)
ISSN 2278-9308

B.Aadhar

Peer Reviewed & Refreed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal
January-2023
(CCCLXXIII) 373-A

स्वाधीनता आंदोलन में
हिंदी भाषा, साहित्य, सिनेमा और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-9308
January, 2023

42	स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में हिंदी काव्य प्रा.डी.आर मुरे	153
43	स्वाधीनता आंदोलन और य पाल के हिन्दी उपन्यास डॉ. कविता मीणा	159
44	स्वाधीनता की बुलंद आवाज.... सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे	162
45	आधुनिक कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	166
46	सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना येलणे देविदास गणेशराव	169
47	स्वाधीनता आंदोलन में रचित हिन्दी कविताओं से आती है वतन से इश्क की खुश्बू डॉ.खानी एम.के.	172
48	स्वाधीनता आंदोलनऔर कविता डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे	175
49	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान डॉ. निभा शांतिलाल उपाध्याय	178
50	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान धनराज शिवदास विराजदार	183
51	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी सिनेमा का योगदान प्रा.डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड	186

Scanned with ACE Scanner

B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-9308
January, 2023

स्वाधीनता आंदोलनऔर कविता

डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख, हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायतनगर, जिलानांदेड
मो. 9923062340 shivajib1429@gmail.com

भारतेन्दु मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को पद्य और गद्य दोनों में अभिव्यक्ति दी। ठीक उसी प्रकार साहित्यकारों नेभी स्वाधीनता संग्राम और सेनानियों कीप्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंग्रेजों द्वारा निरीह भारतीय जनता पर जुल्मोसितम व लूट-पाट का उन्होंने विरोध किया। उन्हें इस बात का क्षोभ था कि अंग्रेज यहां से सारी संपत्ति लूटकर विदेश ले जा रहे थे। इस लूटपाट और भारत की बदहाली पर उन्होंने काफी कुछ लिखा। 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नामक व्यंग्य के माध्यम से भारतेंदु ने तत्कालीन राजाओं की निरंकुशता, अंधेरगर्दी और उनकी मूढ़ता का सटीक वर्णन किया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ ही द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवाररूपी कलम को पैना किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित किया। अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है:-

'भीतर भीतर सब रस चुसै, हंसी हंसी के तन मन धन मुसै।
जाहिर बातिन में अति तेज, क्यों सखि साजन, न सखि अंगरेज।

'भारत-भारती' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त 'राष्ट्रकवि' कहलाए, तो वहीं माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान के भाव जागृत किए। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' आदि कविताओं के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका अदा की। मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने की बात की:-

'हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारें मिलकर ये समस्याएं सभी।'

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' में उन्होंने लिखाहैकि,

'जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।'

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता ने अंग्रेजों को ललकारने का काम किया:-

बुन्देले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।'

पं. श्याम नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दी घाटी' में लिखा:-

'रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था
गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था

Scanned with ACE Scanner

B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-930[illegible]
January, 2023

वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।'

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता को कौन भूल सकता है जिसने अंग्रेजों की चूलें हिलाकर रख दीं। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है:-

'सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।'

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसार ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश।' निराला ने 'भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे।।' कामता प्रसाद गुप्त ने 'प्राण क्या हैं देश के लिए। देश खोकर जो जिए तो क्या जिए।।' इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तां हमारा' तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में लिखा:-

'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए
नाश! नाश! हां महानाश!!! की
प्रलयंकारी आंख खुल जाए।'

इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही देशभक्ति से ओत-प्रोत कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने आजादी की बलिवेदी पर शहीद हुए वीर सपूतों के प्रति अगाध श्रद्धा दिखाई है और बलिदानों को सर्वोपरि बताया है। एक फूल के माध्यम से उन्होंने अपनी बातों को जिस सशक्तता व उत्कृष्टता के साथ कहा है, वह बेहद सराहनीय है। इसी तरह जंगे आजादी में अपनी रचनाओं के माध्यम से विशेष भूमिका निभाने वाले साहित्यकारों की एक लंबी फेहरिस्त है।

'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं मैं गुथू अलकों में विंध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं सम्राटों के द्वार पर हे हरि! डाला जाऊं।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढूं, भाग्य पर इतराऊं
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक'

इसी प्रकार राधाकृष्ण दास, बद्रीनारायण चौधरी, प्रताप नारायण मिश्रा, पंडित अंबिका दत्त व्यास, बाबू रामकिशन वर्मा, ठाकुर जगमोहन सिंह, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे प्रबुद्ध रचनाकारों ने राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की ऐसी गंगा बहाई जिसके तीव्र वेग से जहां विदेशी हुक्मरानों की नींव हिलने लगी, वहीं नौजवानों के अंतस में अपनी पवित्र मातृभूमि के प्यार का जज्बा गहराता चला गया। एक ओर बंकिमचंद्र चटर्जी ने आनंद मठ व वंदे मातरम् जैसी कालजयी रचनाओं का सृजन किया, तो कविवर जयशंकर प्रसाद की कलम भी बोल उठी-

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

Scanned with ACE Scanner

B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-9308
January, 2023

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।'

कविरामधारी सिंह दिनकर भी कहां खामोश रहने वाले थे। मातृभूमि के लिए हंसते-हंसते प्राणोत्सर्ग करने वाले बहादुर वीरों व रणबांकुरों की शान में उन्होंने कहा:-

'कमल आज उनकी जय बोल जला अस्थियां बारी-बारी
छिटकाई जिसने चिंगारी जो चढ़ गए पुण्य-वेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम आज उनकी जय बोल।'
हिन्दी के अन्य कवियों में
'देखना है जुल्म की रफ्तार बढ़ती है कहां तक
देखना है बम की बौछार है कहां तक।'

आजादी के बाद के हालातों को स्पष्ट करते हुए नीरज ने कई रचनाएं लिखी हैं।

'चंद मछेरों ने मिलकर, सागर की संपदा चुरा ली
कांटों ने माली से मिलकर, फूलों की कुर्की करवा ली
खुशियों की हड़ताल हुई है, सुख की तालाबंदी हुई
आने को आई आजादी, मगर उजाला बंदी है।'

आज श्यामलाल गुप्त पार्षद का यह गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा' भले ही हम गुनगुना रहे हों और इकबाल की यह नज्म भी कि 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तां हमारा', लेकिन देश की मौजूदा परिस्थिति इससे भिन्न है। आज के समय में भी वैसी ही धारदार रचनाओं की जरूरत है, जो जन-जन को आंदोलित कर सके, उनमें जागृति ला सके। भ्रष्टाचार व अराजकता को दूर कर हर हृदय में भारतीय गौरव-बोध एवं मानवीय-मूल्यों का संचार कर सके। अत: आज के हमारे कवियों और साहित्यकारों का यह महती दायित्व बनता है कि वे इस देश के बारे में सोचें और उसी परंपरा को जीवित रखें, जो मैथिलीशरण गुप्त की परंपरा है, प्रेमचंद की परंपरा है, नीरज की परंपरा है। और यह स्मरण रखें कि यहां पर राम का चरित्र लिखने के लिए वाल्मीकि तब मिलता है, जब राम इस योग्य होता है कि कोई उसके बारे में लेखनी चला सके। कहने का अभिप्राय है कि यहां पर चाटुकारिता को अपना उद्देश्य नहीं माना जाता और दरबारी कवि होना यहां पर अभिशाप है। यहां दरबार कवि ढूंढता है, कवि दरबारों को नहीं ढूंढते। यहां पर कवि किसी मोह के वशीभूत होकर नहीं लिखते। यहां तो राष्ट्र जागरण के लिए लिखा जाता है, राष्ट्रोत्थान के लिए लिखा जाता है, राष्ट्र उद्धार के लिए लिखा जाता है, क्योंकि सब कवि अपना यह दायित्व समझते हैं कि राष्ट्र जागरण, राष्ट्रोद्धार और राष्ट्रोत्थान ही उनकी लेखनी का एकमात्र व्रत है, एकमात्र विकल्प है।आदि कवियों व साहित्यकारों ने राष्ट्रप्रेम की भावनाएं जागृत कीं और जनमानस को आंदोलित किया। कवि गोपालदास नीरज का राष्ट्रप्रेम भी उनकी रचनाओं में साफ परिलक्षित होता है। जुल्मो-सितम के आगे घुटने न टेकने की प्रेरणा उनकी रचनाओं से प्राप्त होती रही। उन्होंने लोगों को उत्साहित करते हुए लिखा है-

संदर्भ ग्रंथ:

1. उ. प्र. हिन्दी संस्थान एवं संस्कृति विभाग "भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिंदी कवियों का योगदान"
2. मैथिलीशरण गुप्त "भारत भारती"
3. माखनलाल चतुर्वेदी "हिम तरंगिनी"
4. श्रीधर पाठक "भारत गीत"
5. जयशंकर प्रसाद "महाराणा का महत्व"
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी "सुमन"
7. सुभद्रा कुमारी चौहान "मुकुल

Scanned with ACE Scanner